UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार

डॉ. रमेश चन्दर
सहायक प्रोफेसर, संत हरिदास कॉलेज ऑफ़ हायर एजुकेशन नजदीक एयर फ़ोर्स स्टेशन
बैनी कैंप नजफगढ़ नई दिल्ली

सार :
स्वामी विवेकानन्द भारतवर्ष के अमर सपूतों में से एक हैं। उनकी आध्यात्मिकता की गहराई तथा सम्पूर्ण मानवमात्र के प्रति उनका प्रेम हमारे देश की धरोहर है। शिक्षा के क्षेत्र में भी उनके विचारों में उनकी मानवता के प्रति प्रेम तथा आध्यात्म की भावनायें दृष्टिगोचर होती हैं।
स्वामी विवेकानन्द भारतीय दर्शन के पण्डित और अद्वैत वेदान्त के पोषक थे। ये वेदान्त को व्यावहारिक रूप देने के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके दार्शनिक विचार सैद्धान्तिक रूप में इनके द्वारा विचरित पुस्तकों में पढ़े जा सकते हैं और इनका व्यावहारिक रूप रामकृष्ण मिशन के जन कल्याणकारी कार्यों में देखा जा सकता है। स्वामी जी अपने देशवासियों की अज्ञानता और निर्धनता, इन दो से बहुत चिन्तित थे और इन्हें दूर करने के लिए इन्होंने शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया था। ये अपने और अपने साथियों को केवल वेदान्त के प्रचार में ही नहीं लगाए रहे, इन्होंने जन शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में भी बड़ा योगदान दिया है। भारतीय शिक्षा को भारतीय स्वरूप प्रदान करने के लिए ये सदैव स्मरण किये जायेंगे।
मुख्य शब्द : स्वामी विवेकानंद, शिक्षा प्रणाली, वर्तमान शिक्षा प्रणाली, स्वामी जी

परिचय : भारत की वर्तमान और भविष्य में आने वाली परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये हमें अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने की अति आवश्यकता है, हमें ऐसी वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता है, जो समय के अनुकूल हो, हमारी दुर्दशा का मूल कारण, नकारात्मक शिक्षा प्रणाली है |
वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल क्लर्क पैदा करने की मशीनरी मात्र है, यदि केवल यह इसी प्रकार की होती है तो भी मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ
इस दूषित शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षित भारतीय युवा पिता, पूर्वजों, इतिहास एवं अपनी संस्कृति से घृणा करना सीखता है, वह अपने पवित्र वेदों, पवित्र गीता को झूठा समझने लगता है, इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली के द्वारा तैयार हुए युवा अपने अतीत, अपनी संस्कृति पर गौरव करने के बदले इन सब से घृणा करने लगता है और विदेशियों की नकल करने में ही गौरव की अनुभूति करता है, इस शिक्षा प्रणाली के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तिव निर्माण में कोई भी सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा है |
ऐसी शिक्षा का क्या महत्व है, जो हम भारतीय को सदैव परतंत्रता का मार्ग दिखाती है, जो हमारे गौरव, स्वावलंबन एवं आत्म-विश्वास का क्षरण करती है |

स्वामी विवेकानंद जी के प्रमुख विचार

1.पढ़ने के लिए जरूरी है एकाग्रता, एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यान, ध्यान से ही हम इन्द्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त कर सकते है |
2.ज्ञान स्वयं में वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है |
3.उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि तमु अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते |

4.जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है |

5.पवित्रता, धैर्य और उद्यम- ये तीनों गुण मैं एक साथ चाहता हूं |

6.लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्य तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहांत आज हो या युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो |

7.जिस समय जिस काम के लिए प्रतिज्ञा करो, ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहिये, नहीं तो लोगो का विश्वास उठ जाता है |

8.जब तक आप खुद पे विश्वास नहीं करते तब तक आप भागवान पर विश्वास नहीं कर सकते |

9.एक समय में एक काम करो, और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमे डाल दो और बाकी सब कुछ भूल जाओ |

10.जितना बड़ा संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी |

नारी शिक्षा

स्वामी विवेकानन्द समाज में स्त्रियों की दुर्दशा से अत्यन्त दुःखी थे। स्त्री एवं पुरुष के मध्य अन्तर की स्वामी जी ने कटु आलोचना की। उनका कहना था कि समस्त प्राणियों में एक ही आत्मा है, इसलिये स्त्रियों पर कठोर नियन्त्रण रखना वांछनीय नहीं है। स्वामी जी ने स्त्री को पुरुष के समान दर्जा देते हुये कहा कि जिस देश में स्त्री का सम्मान व आदर नहीं होता, वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता।

स्वामी विवेकानन्द ने स्त्रियों की सम्पूर्ण समस्याओं का सर्वप्रमुख कारण अशिक्षा बताया है। स्वामी जी स्त्री शिक्षा के पक्षपाती थे। नारी शिक्षा के महत्त्व के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है- "पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो, तब वे आपको बतायेंगी कि उनके लिये कौन-कौन से सुधार करने आवश्यक हैं ? उनके सम्बन्ध में तुम बोलने वाले कौन हो ?" स्वामी जी का कहना था कि धर्म स्त्री शिक्षा का केन्द्रबिन्दु होना चाहिए और स्त्री शिक्षा के मुख्य अंग चरित्र गठन, ब्रह्मचर्य पालन एवं पवित्रता होने चाहिए। स्त्री शिक्षा के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्वास्थ्य रक्षा, कला, शिशुपालन, कला-कौशल गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्य, चरित्रगठन के सिद्धान्त, पुराण, इतिहास, भूगोल इत्यादि विषयों को समाविष्ट किया जाना चाहिए। स्वामी जी भारतीय स्त्रियों को सीता-सावित्री जैसी स्त्रियों के आदर्शों का पालन एवं अनुकरण करने हेतु कहा करते थे। वे नारी में नारीत्व को विकसित करना चाहते थे, पुरुषत्व को नहीं। उनके शब्दों में-"मेरी बच्चियो ! महान् बनो, महापुरुष बनने का प्रयास मत करो।"

जन- शिक्षा

स्वामी विवेकानन्द देश के निर्धन एवं निरक्षर व्यक्तियों की दयनीय स्थिति को देखकर अत्यन्त दुःखी थे। उनके अनुसार "जब तक भारत का जन समूह भली प्रकार शिक्षित नहीं हो जाता, भली प्रकार उनका पेट नहीं भर जाता तथा उन्हें उत्तम संरक्षण नहीं मिलता, तब तक कोई भी राजनीति सफल नहीं हो सकती।" स्वामी जी का विश्वास था कि इन दीन दुःखियों की दशा में शिक्षा के माध्यम से सुधार किया जा सकता है। यदि अपने देश को समृद्धशील बनाना है तो उसे इन असंख्य नर-नारियों को शिक्षित करना होगा।

भारत जैसे विशाल देश में जनसाधारण की शिक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में स्वामी जी के विचारों का डॉ० सेठ ने इस प्रकार उल्लेख किया है- "जनता को शिक्षित करने हेतु गाँव-गाँव, घर-घर जाकर शिक्षा देनी होगी। इसका कारण यह है कि ग्रामीण बालकों को जीविकोपार्जन हेतु अपने पिता के साथ खेत पर काम करने हेतु जाना पड़ता है। वे शिक्षा ग्रहण करने शिक्षालय नहीं आ पाते हैं। इस सम्बन्ध में स्वामी जी ने सुझाव दिया है कि यदि संन्यासियों में से कुछ को धर्मेत्तर विषयों की शिक्षा देने हेतु गठित कर लिया जाये तो अत्यन्त सहजता से घर-घर घूमकर वे अध्यापन एवं धार्मिक शिक्षा दोनों कार्य कर सकते हैं। कल्पना कीजिये कि दो संन्यासी कैमरा, ग्लोब तथा कुछ मानचित्रों के साथ सायंकाल किसी गाँव में पहुँचे। इन साधनों के माध्यम से वे जनता को भूगोल, ज्योतिष इत्यादि की शिक्षा प्रदान करते हैं। इसी तरह कथा-कहानियों के माध्यम से वे दूसरे देश के बारे में अपरिचित जनता को इतनी बातें बताते हैं, जितनी वे पुस्तक के माध्यम से आजीवन में नहीं सीख सकते हैं। क्या इन वैज्ञानिक साधनों द्वारा आज की जनता के अज्ञानयुक्त तिमिर को जल्दी दूर करने का यह एक उपयुक्त सुझाव नहीं है ? क्या संन्यासी स्वयं इस लोकसेवा के माध्यम से अपनी आत्मा के प्रकाश को अधिकाधिक प्रदीप्त नहीं कर सकते हैं।" स्वामी जी के अनुसार जनशिक्षा के कार्य को सरकार एवं समाज दोनों को मिलकर करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. आर. ए . शर्मा (2011)। शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार। मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
2. कपिल, एच.के. & सिंह, ममता (2013)। सांख्यिकी के मूल तत्व। आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
3. कौल, लोकेश (2012)। शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली। नोएडाः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
4. गुप्ता, एस. (2005)। एजुकेशन इन इमर्जिंग इण्डियॉ, टीचर्स रोल इन सोशाइटी। दिल्लीः शिप्रा पब्लिकेशन्स।
5. गरेॅट, एच.ई. (2000)। शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयागे । लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स।